TOP RANKERS
where career starts

पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन

- रीयों सम्मेलन
- 1992 में रियो डी जेनेरो में आयोजित पृथ्वी सम्मेलन।
- संबोधित मुद्दे:
- उत्पादन प्रणाली की जांच
- जीवाश्म ईंधन के उपयोग को बदलना।
- सार्वजनिक परिवहन पर विश्वास।

TOP RANKERS
where career starts

पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन

- दस्तावेज़:
- रियो घोषणा
- कार्यसूची 21
- वन (जंगल) सिद्धांत

TOP RANKERS
where career starts

कानूनी रूप से बाध्यकारी समझौते:
जैविक विविधता पर सम्मेलन
जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त ढांचा सम्मेलन (UNFCC)
कार्यसूची 21
कार्य योजना
सतत विकास

जैविक विविधता पर सम्मेलन (CBD)

- जैविक विविधता का संरक्षण
- सतत उपयोग
- लाभ का न्यायसंगत साझाकरण

TOP RANKERS
where career starts

जैव-सुरक्षा पर कार्टाजेना प्रोटोकॉल

- प्रौद्योगिकियों तक पहुंच और हस्तांतरण
- जैव प्रौद्योगिकियों की सुरक्षा को बढ़ाने के लिए उचित प्रक्रियाएं।

TOP RANKERS
where career starts

UNFCC

- 1992 देश शामिल: औसत वैश्विक तापमान वृद्धि और परिणामी जलवायु परिवर्तन।
- अब 195 पार्टियां

TOP RANKERS
where career starts

COP क्या है?

COP सम्मेलन का सर्वोच्च निर्णय लेने वाला निकाय है। सम्मेलन के पक्ष में सभी राज्यों को COP में दर्शाया जाता है, जिस पर वे सम्मेलन के कार्यान्वयन की समीक्षा करते हैं और COP गोद लेते हैं और सम्मेलन के प्रभावी कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक निर्णय लेते हैं, जिसमें संस्थागत और प्रशासनिक व्यवस्था शामिल है।

TOP RANKERS™
where career starts

Climate Policy Timeline

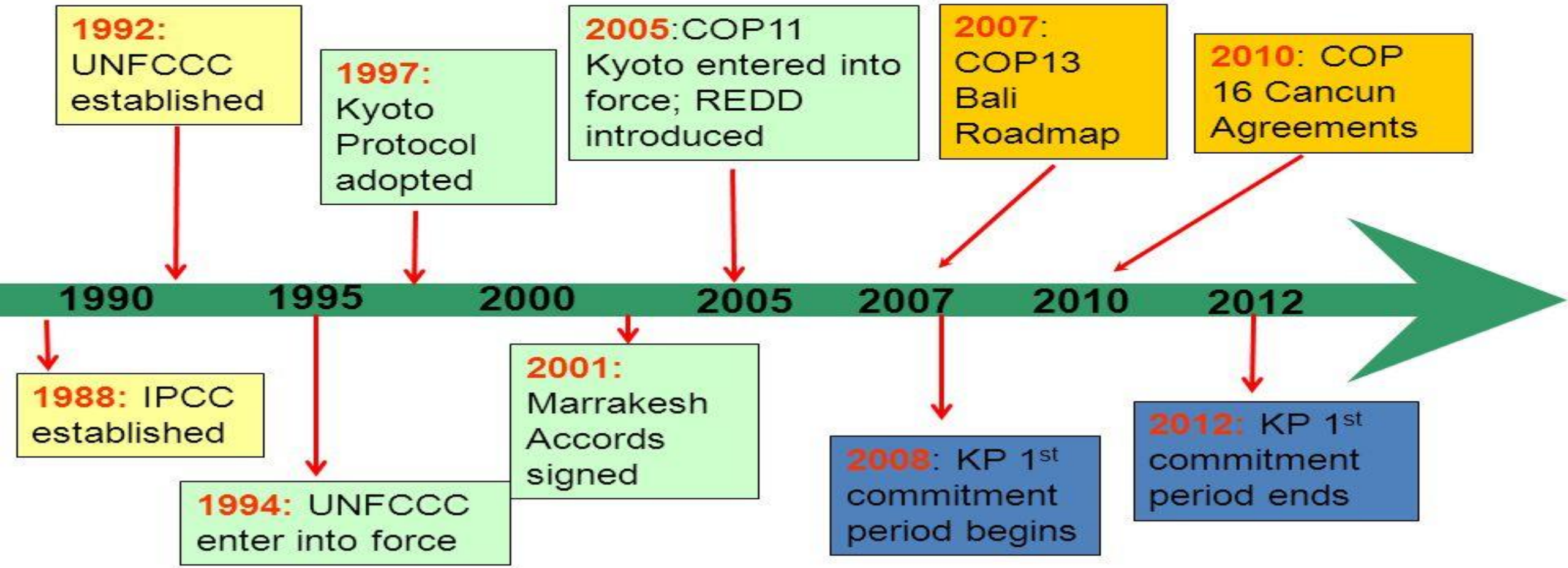

TOP RANKERS
where career starts

क्योटो प्रोटोकोल

- यह विकसित देशों को सम्मेलन के सिद्धांतों के आधार पर ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को स्थिर करने के लिए प्रतिबद्ध करता है।
- लक्ष्य:
- 37 वर्षों के लिए बाध्यकारी उत्सर्जन में कमी।
- यह केवल विकसित देशों के लिए बाध्यकारी है।
- सामान्य लेकिन विशेष जिम्मेदारीयां।

1. संयुक्त कार्यान्वयन
2. स्वच्छ विकास तंत्र
3. कार्बन व्यापार
4. उत्सर्जन व्यापार
5. ऑफ़सेट व्यापार

TOP RANKERS
where career starts

पेरिस समझौता

12 दिसंबर 2015 को 21वें COP सम्मेलन में UNFCCC के पक्ष जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए एक ऐतिहासिक समझौते पर पहुंचे और एक जरूरी सतत कम कार्बन भविष्य के लिए आवश्यक कार्यों और निवेश को और तेज करने के लिए एक समझौते पर सहमत हुए। पेरिस समझौता इस सम्मेलन के उपर बना है और पहली बार सभी देशों को जलवायु परिवर्तन से निपटने और इसके प्रभावों के अनुकूल होने के लिए महत्वाकांक्षी प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है जिससे विकासशील देशों को ऐसा करने में सहायता मिलती है।

पेरिस समझौते का मुख्य उद्देश्य जलवायु परिवर्तन के खतरे पर वैश्विक प्रतिक्रिया को मजबूत करना है। इस शताब्दी में तापमान वृद्धि को 2 डिग्री सेल्सियस से नीचे रखना तथा पूर्व-औद्योगिक स्तर 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने के प्रयासों को आगे बढाना। इसके अतिरिक्त, समझौते का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निपटने के लिए देशों की क्षमता में वृद्धि करना और कम GHG उत्सर्जन और जलवायु के लचीले मार्ग के अनुरूप वित्त प्रवाह करना है।

पृथ्वी दिवस के अवसर पर 22 अप्रैल 2016 को न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में हस्ताक्षर के लिए पेरिस समझौता खोला गया। यह 4 नवंबर 2016 को तथाकथित "डबल थ्रेसहोल्ड" (55 देशों द्वारा अनुमोदन जो वैश्विक उत्सर्जन के कम से कम 55% के लिए खाता है) के 30 दिनों बाद लागू हुआ था। तब से, कई देशों ने इसकों मंजूर किया है और समझौते की पुष्टि जारी रखी है, जो 2017 की शुरुआत में कुल 125 दलों तक पहुंच गई थी।

TOP RANKERS
where career starts

कातोविसे, पोलैंड	COP 24
बॉन, जर्मनी	COP 23
माराकेच, मोरक्को	COP 22

TOP RANKERS
where career starts

पेरिस समझौते से अमेरिका बाहर

- ट्रम्प प्रशासन जीवाश्म ईंधन उद्योग से करीब से जुड़ा हुआ है, और ब्याज समूह अमेरिकी राजनीति की एक परिभाषित विशेषता है।
- ट्रम्प ने जलवायु परिवर्तन पर संदेह किया है और वह वैश्विक जलवायु सहयोग में आम लेकिन विभेदित जिम्मेदारी के मौलिक सिद्धांत को स्वीकार करने से इनकार करते हैं। उन्होंने कभी भी सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया है कि जलवायु परिवर्तन हो रहा है और यह मुख्य रूप से मनुष्यों के कारण होता है, जो की अधिकांश अमेरिकी वैज्ञानिकों द्वारा साझा की जाने वाली आम सहमति है।

TOP RANKERS™
where career starts

- अमेरिका का पेरिस समझौते से बाहर होना इस समझौते की सार्वभौमिकता को काफी हद तक कमजोर करती है, जिसे वैश्विक जलवायु व्यवस्था की रीढ़ की हड्डी के रूप में माना जाता है।

- अमेरिकी जिम्मेदारियों के उन्मूलन के चलते वैश्विक जलवायु शासन में नेतृत्व की कमी को बढ़ा दिया है।

- अमेरिका का इस समझौते से बाहर होना वैश्विक जलवायु सहयोग के लिए एक बुरी मिसाल रखता है; अमेरिका यदि अपने NDCs हासिल करने में विफल रहता है तो अनिवार्य रूप से अन्य देशों के शमन प्रयासों पर स्वतंत्र रूप से सवारी करेगा ।

- पेरिस समझौते से बाहर होने के बाद, अमेरिका ने अन्य देशों के उत्सर्जन की जगह को निचोड़ते हुए और उनकी शमन लागत बढ़ाने के दौरान खुद के लिए अधिक उत्सर्जन स्थान और कम शमन लागत हासिल की, इस कारण से 2 डिग्री सेल्सियस लक्ष्य हासिल करना और अधिक कठिन और महंगा हो जाएगा।

- जलवायु अनुसंधान वित्त पोषण में ट्रम्प प्रशासन द्वारा सीधी कटौती से भविष्य की IPCC रिपोर्ट की गुणवत्ता से समझौता करेगा और आखिरकार भविष्य में जलवायु वार्ता के अधिकार को कमजोर करेगा।

TOP RANKERS
where career starts